# कालिदास के काव्यों की छन्दयोजना

**वैद्य गोपीनाथ पारीक 'गोपेश'**
अध्यक्ष – राजस्थान आयुर्वेद विज्ञान परिषद्
साहित्य सरोवर संस्था

वैदिक साहित्य का छन्द चतुर्थ अङ्ग है। इससे पहले शिक्षा, व्याकरण और निरुक्त आते हैं। सभी वेद प्राय: छन्दोबद्ध हैं। केवल यजुर्वेद में छन्दों के अतिरिक्त गद्य भी हैं। वेद के ब्राह्मण और आरण्यक खण्ड में वैदिक छन्दों की कथायें आयी हैं। वैदिक छन्द सात कहे गये हैं – गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् और जगती। उत्तररामचरित में लिखा है कि सर्वप्रथम कवि वाल्मीकि के मुख से लौकिक अनुष्टुप् छन्द की रचना हुई। इससे यह ज्ञात होता है कि अनुष्टुप् छन्द वैदिक भी हैं और लौकिक भी। लौकिक छन्द अनन्त हैं। कात्यायन प्रणीत सर्वानुक्रमणिका के बाद छन्द: शास्त्र के सबसे प्राचीन महर्षि पिङ्गल हैं। इन्होंने लाखों छन्दों का उल्लेख किया है, किन्तु संस्कृत साहित्य में इनमें से लगभग ५० प्रकार के छन्दों का ही व्यवहार होता है। महर्षि पिङ्गल को शेषावतार कहा गया है।

ये छन्द वर्णिक और मात्रिक भेद से दो प्रकार के हैं। वर्णिक में निर्दिष्ट छन्दों के अनुसार वर्ण रखे जाते हैं जबकि मात्रिक में मात्रायें गिनी जाती हैं। इनमें वर्णिक को वृत्त तथा मात्रिक को जाति भी कहा जाता है। ह्रस्व अक्षर को लघु तथा दीर्घ अक्षर को गुरु कहा जाता है। संयुक्त अक्षर के पूर्व का अक्षर गुरु होता है। लघु का संकेत '।' तथा गुरु का संकेत 'ऽ' होता है। कुल गण आठ होते हैं। इन गणों के ज्ञान के लिये एक सूत्र है – 'य मा ता रा ज भा न स ल ग म्' इनके अनुसार ही गणों के नाम हैं। यथा य मा ता (पगण) इसी प्रकार मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण और सगण होते हैं। 'ल' लघु का द्योतक है तथा 'गम्' गुरु का द्योतक है। संस्कृत भाषा में अधिकतर वर्णिक छन्दों का प्रयोग होता है। इनमें वंशस्थ, वसन्ततिलका, मालिनी आदि वर्णिक छन्द हैं। हिन्दी भाषा में प्राय: मात्रिक छन्दों का प्रयोग किया जाता है–दोहा, रोला आदि मात्रिक छन्द हैं। इन सभी प्रकार के छन्दों की परिसीमायें निश्चित की गयी हैं। उनके अनुसार ही छन्दों की रचना की जाती है। इसके विपरीत रचना

का निषेध है। कहा गया है – 'छन्दोभङ्गं न कारयेत्'।

प्रियप्रवास (अयोध्यासिंह उपाध्याय) हिन्दी का काव्य होते हुये भी इसमें संस्कृत के द्रुतविलम्बित, स्रग्धरा आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार साहित्यवैभवम् (मञ्जुनाथ विरचित) में हिन्दी छन्द घनाक्षरी, सवैया आदि का प्रयोग किया गया है। अत: इन वर्णिक–मात्रिक छन्दों के उपयोग करने में कवि स्वतंत्र है। इसी प्रकार कई कवियों ने एक ही छन्द में विविध भाषाओं का प्रयोग कर चित्रकाव्य के उहाहरण भी प्रस्तुत किये हैं–

**यस्मिन्देशे निर्गुणे निर्विवेके,**

**न क्वापि स्याद् वेदशास्त्रस्य चर्चा।**

**प्राज्ञ: प्रज्ञाहीनवत् तत्र तिष्ठेत्**

**'कीजै' काणे देश में आँख काणी।।**

जयपुर के श्री कृष्णराम भट्ट तथा श्री मथुरानाथ शास्त्री ने छन्दों में ऐसे प्रयोग खूब किये हैं।

वृत्तरत्नाकर के अनुसार पवर्ग ह ट ठ आदि कई वर्ण अशुभ माने गये हैं, जिन्हें काव्य के प्रारम्भ में छन्द के रूप में प्रयुक्त नहीं करना चाहिए। ये अक्षर भी यदि देवस्तुति या मंगलवाचक हों, तो कोई दोष नहीं है। छन्दों में व्यवहृत यगण, मगण, भगण और नगण शुभ माने गये हैं तथा शेष अन्य अशुभ। सभी स्वर तथा क ग घ च छ ज द ध न य श स ये व्यंजन शुभ वर्ण हैं। रचना की पंक्तियों में एक निश्चित लय तथा यति–गति और ओज–माधुर्य–प्रसाद गुण प्रकट करने हेतु इन सभी बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है।

इसी प्रकार वर्णनीय विषय के अनुकूल छन्दों का प्रयोग भी उपयुक्त होता है। आचार्य क्षेमेन्द्र ने स्पष्ट लिखा है–

**काव्ये रसानुसारेण वर्णनानुगुणेन च।**

**कुर्वीत सर्ववृत्तानां विनियोगविभागवित्।।**

महाकवि कालिदास ने यथासम्भव भावानुसार छन्दों की योजना की है–

१. वंशवर्णन, नायक-नायिका सौन्दर्य, तपस्या आदि में प्राय: उपजाति छन्द का प्रयोग किया है।

२. उपदेश देने एवं कथावर्णन में अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग किया गया है।

३. युद्ध-वीरता आदि में वंशस्थ छन्द का प्रयोग किया है।

४. समृद्धिवर्णन में द्रुतविलम्बित छन्द का प्रयोग किया गया है।

५. कामक्रीड़ा, आखेट या अन्य खेदजनक वर्णनों में रथोद्धता छन्द को उपयोग में लिया गया है।

६. करुणप्रसंग में वैतालीय (वियोगिनी) नामक छन्दों का प्रयोग किया गया है।

७. प्रवास, विपत्ति, वर्षा के प्रसंग में मन्दाक्रान्ता छन्द को अपनाया गया है। वर्षाकाल में मार्ग पंकिल हो जाने से जैसे प्रवासी पथिक की गति मन्द हो जाती है, उसी प्रकार मन्दाक्रान्ता छन्द की रचना यतिनियम से मन्द होती है-'प्रावृट् प्रवास व्यसने मन्दाक्रान्ता विराजते'। कालिदास ने इस मन्दाक्रान्ता छन्द की मधुरता, मन्दता को ध्यान में रख कर ही सम्पूर्ण मेघदूत में इसी छन्द की योजना कर अपने उत्कृष्ट वाग्वैभव का परिचय दिया है।

८. सम्पत्ति एवं सफलता में मालिनी छन्द का प्रयोग किया गया है।

९. हर्षातिरेक, हर्षपूर्वक सर्गान्त में प्रहर्षिणी छन्द का प्रयोग कियाग गया है।

१०. नायक का अभ्युदय एवं सौभाग्यवर्धन के प्रसंगों, में प्राय: हरिणी छन्द अपनाया गया है।

११. ऋतुवर्णन, ऋतु की सफलता आदि के अवसर पर वसन्ततिलका नामक छन्द का वर्णन किया गया है।

मेघदूत में मन्दाक्रान्ता के अतिरिक्त अन्य काव्यग्रन्थों में वर्णनानुकूल भिन्न भिन्न छन्दों की योजना है। ऋतुसंहार में वसन्ततिलका, उपजाति और मालिनी का प्रयोग हुआ है। कुमारसंभव में उनके साथ अनुष्टुप्, वंशस्थ, पुष्पिताग्रा, शार्दूलविक्रीडित, रथोद्धता, हरिणी आदि की भी योजना है। रघुवंश में तोटक, वैतालिक, द्रुतविलम्बित, नाराच आदि छन्दों का भी विनियोग हुआ है। वस्तुत: कालिदास एक महाकवि थे, जिनके काव्यों में छन्द, अलंकार आदि उनकी भावधारा के अंग बन कर स्वयमेव आ जाते थे।

अब इन प्रयुक्त छन्दों के संक्षिप्त लक्षण जिज्ञासुओं के हेतु यहाँ दिये जा रहे हैं-

**१. अनुष्टुप्**

**श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम्।**

**द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः।।**

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण का पाँचवा अक्षर लघु तथा छठा अक्षर गुरु होता है तथा प्रथम एवं तृतीय चरण का सातवाँ अक्षर गुरु होता है और द्वितीय–चतुर्थ चरण का सातवाँ अक्षर लघु होता है, उसे अनुष्टुप् छन्द कहते हैं।

**२. मन्दाक्रान्ता**

'मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मोभनौ तौ गयुग्मम्'। जिस छन्द के प्रत्येक चरण में एक मगण, एक भगण, एक नगण, दो तगण तथा दो गुरु होते हैं, वह छन्द मन्दाक्रान्ता है। इसके चौथे, छठे एवं सातवें अक्षरों पर यति होती है।

**३. उपजाति**

जिस छन्द में इन्द्रवज्रा छन्द के तीन चरण तथा उपेन्द्रवज्रा का एक चरण अथवा उपेन्द्रवज्रा के तीन चरण तथा इन्द्रवज्रा का एक चरण हो, वह उपजाति छन्द कहलाता है। इन्द्रवज्रा – 'स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौगः' जिस छन्द के प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण तथा दो गुरु हों, उसे इन्द्रवज्रा कहते हैं। उपेन्द्रवज्रा – 'उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ'– के अनुसार प्रत्येक चरण में एक जगण, एक तगण, एक जगण और अन्त में दो गुरु हों, वह उपेन्द्रवज्रा छन्द होता है। उपेन्द्रवज्रा का प्रथम अक्षर लघु होता है और इन्द्रवज्रा का प्रथम अक्षर गुरु होता है, यही इनमें भेद है। शेष दोनों में समानता है।

**४. वसन्ततिलका**

उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः। जिस छन्द के प्रत्येक चरण में एक तगण, एक भगण, दो जगण तथा अन्त में दो गुरु हों, वह वसन्ततिलका छन्द है।

**५. मालिनी**

'न न म य य यु ते यं मालिनी भोगिलोकैः'। जिस छन्द के प्रत्येक चरण में दो नगण, एक मगण और दो यगण हो, वह छन्द मालिनी छन्द कहलाता है।

**६. प्रहर्षिणी** –

'म्नौ ज्रौ गः, त्रिदशयतिः प्रहर्षिणीयम्' जिस छन्द के प्रत्येक चरण में एक मगण, एक नगण, एक जगण, एक रगण और अन्त में एक गुरु हो, वह प्रहर्षिणी है। इसमें तीन और दसवें अक्षर पर विराम होता है।

**७. द्रुतविलम्बित**

'द्रुतविलम्बितमाह न भौ भरौ'। जिस छन्द में प्रत्येक चरण में एक नगण, दो भगण और एक रगण हो, वह द्रुतविलम्बित है।

**८. वंशस्थ** –

'वदन्ति वंशस्थविलं जतौ जरौ'। जिस छन्द के प्रत्येक चरण में एक जगण, एक तगण, फिर एक जगण और एक रगण हो वह वंशस्थ छन्द है।

**९. रथोद्धता** –

'रात्पैरैर्नरलगैः रथोद्धता'। जिस छन्द के प्रत्येक चरण में एक रगण, एक नगण, एक रगण और अन्त में एक लघु एक गुरु होता है, वह रथोद्धता है।

**१०. हरिणी** –

'रसयुगहयैर्न्सौ म्रौश्लौ गोयदा हरिणी तदा'। जिस छन्द के प्रत्येक चरण में एक नगण, एक सगण, एक मगण, एक रगण, एक सगण, एक लघु तथा गुरु हो, वह हरिणी छन्द है। इसमें क्रमशः ६, ४, ७ अक्षरों पर विराम होता है।

**११. वैतालीय** –

इस छन्द में प्रथम तथा तृतीय चरण में १०-१० अक्षर और क्रमशः दो सगण, एक जगण, एक गुरु तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में ११-११ अक्षर क्रमशः सगण, भगण, रगण, लघु, गुरु होते हैं, वह वैतालीय (वियोगिनी) छन्द है।